सेना में शिल्पकारों का योगदान: कुमाऊँ के विशेष संदर्भ में

निशा*, तेजप्रताप**

सारांश

शिल्पकारों की स्थिति शुरू से ही दयनीय थी इन्हें समाज में हेय दृष्टि से देखा जाता रहा है। इनके साथ खान–पान व अन्य क्रियाओं को 'अछूत' माना जाता था। ब्राह्मण, क्षत्रिय व अन्य वर्गों द्वारा इनकी सदैव उपेक्षा होती रही है। इसके विपरीत देखा जाये तो समाज के प्रत्येक क्षेत्र में इनका योगदान रहा है। मध्यकाल में भी इनकी सामाजिक स्थिति में गिरावट आयी। अंग्रेजी शासन के आरम्भिक दिनों में भी इनकी स्थिति दयनीय थी। द्वितीय विश्व युद्ध में इन्हें ब्रिटिश सरकार द्वारा सेना मे भर्ती की प्रक्रिया का शुभारम्भ हुआ। परन्तु लोगों द्वारा इसका विरोध भी किया गया। उस समय शिल्पकारों को सेना में भर्ती योग्य नहीं माना जाता था, विरोध के बावजूद भी ब्रिटिश सरकार द्वारा इनके लिए हरिनगर, नरसिंह डांडा (पिथौरागढ़) व लोहाघाट में बस्तियों का निर्माण किया गया। इस पूरे घटनाक्रम में हरि प्रसाद टम्टा का बहुत योगदान रहा इन्होंने अनेक विज्ञापनों द्वारा शिल्पकार वर्ग को सेना में भर्ती होने के लिए प्रोत्साहित किया। इन्हीं के कठिन परिश्रम से भारत के दलित वर्गों में सर्वप्रथम शिल्पकार वर्ग (अनुसूचित जाति) को फौज में भर्ती होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। तब से अब तक इस वर्ग ने भारतीय सेना में विशेष योगदान दिया है।

शोध–पत्र के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध–पत्र के अनेक उद्देश्य निम्नलिखित हैः–

1 शिल्पकारों के सेना मे योगदान को दर्शाना।
2 कुमाऊँ रेजीमेण्ट की स्थापना के पूर्ण घटनाक्रम को समझाना।
3 शिल्पकारों के उत्थान में हरि प्रसाद टम्टा का योगदान।
4 ब्रिटिश सरकार द्वारा सेना में भर्ती हेतु कोई भेद–भाव पूर्ण नीति नहीं अपनायी गई।
5 द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान हजारों की संख्या में शिल्पकारों की सेना में भर्ती की गई जिससे उनके जीवन स्तर व सामाजिक स्थिति में परिवर्तन आया।

शोध प्रविधि

इस शोध–पत्र को प्रस्तुत करने में ऐतिहासिक, साहित्यिक व सांख्यिकीय पद्धति का प्रयोग किया गया है। इस शोध–पत्र के तथ्यों के संकलन में मैंने द्वितीयक स्रोतो जैसे– किताबें, प्रकाशित व अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, उपलब्ध साहित्य, जनरल, अखबार, पत्र–पत्रिकाएँ आदि को अपनाया है। इन्हीं से उद्धत आँकड़ों व तथ्यों के आधार पर यह शोध–पत्र प्रस्तुत किया जा रहा है।

औपनिवेशिक काल के प्रारम्भ से प्रथम विश्व युद्ध तक कुमाऊँ के शिल्पकारों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति बेहतर नहीं थी। आन्तरिक रूप से ब्रिटिश सरकार की भी शिल्पकारों में बहुत अधिक रूचि नहीं थी। प्रथम विश्वयुद्ध तक शिल्पकारों को फौज के योग्य नहीं समझा गया था, क्योंकि सन् 1818 से चले आ रहे ''मार्सियल रेसेस'' के अपमानजनक पुरातन सिद्धान्त को समाप्त कर जाति वर्ग की दरार को घटाने और समता की शुरूआत करने मे सरकार की विशेष दिलचस्पी नही थी।[1]

यद्यपि समय परिवर्तन के साथ–साथ लोगों की विचारधाराओं में बदलाव आया और सरकार को भी काम करने वाले सिपाही चाहिए थे। अतः औपनिवेशिक सरकार का ध्यान शिल्पकार लोगों की ओर गया, जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण 1917 में भीमताल (नैनीताल) में शिल्पकारों के लिए एक ''डबल कोर डिपो'' की स्थापना से मिलता है। साथ ही शिल्पकारों के लिए एक ''डबल कम्पनी'' भी स्थापित की गयी।[2] इसी समय समय श्री हरि प्रसाद टम्टा ने शिल्पकारो के नाम एक वक्तव्य जारी किया। जिसके उत्तर में 10,000 शिल्पकारों ने ब्रिटिश सरकार को अपनी सेना देने की इच्छा जाहिर की। इस जागरूकता के पीछे सबसे मुख्य कारण था, हरिप्रसाद टम्टा की व्यवहारिकता, दूरदर्शिता तथा समझदारी।

*शोध छात्रा, इतिहास विभाग, डी0एस0बी0परिसर, कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल
**शोध छात्र, वाणिज्य विभाग, राधेहरि राजकीय स्ना0 महाविद्यालय काशीपुर

अतः ब्रिटिश सरकार द्वारा तय किया गया कि उन्हें 14.50 रूपये प्रति माह वेतन के अलावा मुफ्त में भोजन और वर्दी दी जायेगी। तत्पश्चात् 1918 में भीमताल में शिल्पकारों के लिए ''सुपरमैन कम्पनी'' स्थापित की गई। इसी दौरान हजारों की संख्या में नौजवान शिल्पकार भर्ती करके विदेश भेजे गये।[4] अपनी जाति के लोगों को विदेश जाता देखकर अन्य शिल्पकार भी सोचने लगे क्यों न हम लोग भी सेना में भर्ती होकर विदेश जायें और वहाँ से अच्छा पैसा कमाकर वापस अपने देश लौटें। 24 दिसम्बर, 1925 में मुन्शी हरि प्रसाद टम्टा 'म्यूनिसिपल कमिश्नर और मैम्बर डिस्ट्रिक्ट बोर्ड' के सभापतित्व में ''कुमाऊँ शिल्पकार सम्मेलन'' ग्रेनाइट हिल (धौली पर्वत) अल्मोड़ा में सैकड़ों शिल्पकारों के सम्मुख स्वीकृत हुए तमाम प्रस्तावों में से एक प्रस्ताव था कि शिल्पकारो की राजभक्ति, जक्राकशी आदि पर विशेष ध्यान रखकर ''सुपरमैन'' तथा अन्य फौजी सेवा के लिए शिल्पकारो की स्थाई बटाालियन बनाई जाये, जैसा कि महायुद्ध के समय बनाई गई थी।[5]

हमारे देश में कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है जहाँ समाज के शिल्पकार वर्ग (अनुसूचित जाति) का योगदान न रहा हो प्रस्तुत शोध पत्र में मेरे द्वारा यह दर्शाने का प्रयास किया गया है। यहाँ तक कि सेना में भर्ती होकर इस वर्ग की राजभक्ति सामने आयी है। इन सबके बावजूद आज भी समाज में इन पर अत्याचार तथा उत्पीड़न होना चिन्ताजनक है, इसलिए कानून बनाने की भी आवश्यक हुई। प्रस्तुत शोध पत्र इस वर्ग के द्वारा किये गये योगदान को दर्शाते हुए ऐतिहासिक पक्ष प्रस्तुत करता है। इस बीच शिल्पकार बटालियन के बारे में सोचना स्थगित नहीं हुआ था। अन्त में पाँच साल के अन्तराल पुनः 1930 में शिल्पकारों कि बटालियन बनाए जाने का प्रस्ताव रखा गया। यद्यपि जनवरी, 1941 में बागेश्वर के मेले में ''शिल्पकार सम्मेलन'' में कुछ सफलता मिली। एक प्रकार से हरि प्रसाद टम्टा ने भू–स्वामित्व किये गये प्रयासो में भी कुछ सफलता हासिल की। ब्रिटिश सरकार द्वारा हरि नगर, नरसिंग डांडा (पिथौरागढ़) और लोहाघाट में शिल्पकार बस्तियों की स्थापना की गयी, तो इससे शिल्पकार लोग बहुत खुश हुए जिसके परिणामस्वरुप द्वितीय विश्व युद्ध में आपातकालीन भर्ती में शिल्पकारों की भर्ती होने में देखा जा सकता है। इस तरह शिल्पकारों के लिए नया मार्ग खुला। सेना में अधिक से अधिक शिल्पकार जाकर भर्ती हो, इसके लिए हरि प्रसाद टम्टा ने भर्ती हेतु विज्ञापन दिये और स्वयं भर्ती के लिए दूर–दराज क्षेत्रों का पैदल भ्रमण किया। विज्ञापन इस प्रकार था– ''लखनऊ भर्ती क्षेत्र से तीन मजदूर कम्पनियों की भर्ती की जाने वाली है। पहली कम्पनी में आधी संख्या कुमाऊँ वालों की और आधी अहीर, कुर्मी, गडरिया, लोध आदि जाति वाले हिन्दुओं की होगी। दूसरी कम्पनी में शिल्पकार ही भर्ती किये जाएँगे। तीसरी कम्पनी में आधे शिल्पकार और शेष गैर पहाड़ी इलाकों के पासी, चमार और अनुसूचित जाति वाले होंगे''[7]

हालांकि शिल्पकारों की अधिक भर्ती के कारण मजदूर कम्पनी में शिल्पकारो के प्रति रोष प्रकट हुआ, क्योंकि प्रथम विश्व युद्ध में उनकी एक 'डबल कम्पनी' बनी थी और पुनः सरकार से शिल्पकार जाति फौज में भर्ती की रुकावटों तथा भेद–भाव को तुरन्त हटा देने का आग्रह किया गया। लेकिन विरोध के बावजूद भी ब्रिटिश सरकार द्वारा लगभग 600 शिल्पकारों को जिला अल्मोड़ा से भर्ती किया तथा 200 को जिला गढवाल से नई 'सुपरमैन सेना' में भर्ती का लक्ष्य रखा गया।[8]

यह शिल्पकारो के लिए शुभ समय था। प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात् शिल्पकारो की भर्ती के लिए जो नया मार्ग खुला वह निरन्तर विस्तृत होता गया। यह भी बडे सौभाग्य की बात थी, कि द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान रिपोर्टिंग ऑफिसर ने पर्वतीय शिल्पकारों को फौज में लेने का वादा किया। जिन बन्धुआ मजदूरों के पास दूर–दराज के इलाकों से आने के लिए पैसा नहीं था उन्हें हरि प्रसाद टम्टा घोड़े पर बिठाकर लाए।[9] हरि प्रसाद टम्टा शिल्पकार लोगों को आगे बढ़ाने में भरसक प्रयास कर रहे थे और द्वितीय विश्व युद्ध में 300 तकनीकी जवान फौज को दिये। बागेश्वर, कपकोट, कांडा, छानी, उड्यार, धरमधर, चौकोडी, बेरीनाग, थल, गंगोलीहाट, गनाई, गंगोली तथा कनारीछिना आदि क्षेत्रो में स्वयं जाकर घर–घर से शिल्पकार जवान लड़को को एकत्रित किया और तीन ''पाइनियर बटालियन'' बनाई, जिन्हें लखनऊ के दिलकुशा क्षेत्र में ट्रेनिंग दी गयी।[10] सेना के जवानो में 560 कुमाऊँ और गढ़वाल से थे। इन महीनों में लगातार भर्ती का क्रम तीव्र गति से चलता रहा। जिसका प्रतिफल 1 अगस्त, 1941 को तीन 'पाइनियर बटाालियन' के शिल्पकार जवानों को लखनऊ में हरि प्रसाद टम्टा द्वारा संबोधित करने में देखा गया।[12] अतः टम्टा से ब्रिटिश सरकार बहुत प्रसन्न हुई और उन्होंने हरि प्रसाद टम्टा को इस कार्य के लिए ''गार्ड ऑफ ऑनर'' प्रस्तुत किया।[11]

इसी दौर में ब्रिटिश सरकार द्वारा कई प्रतिष्ठित सम्मान समाज से उभरे सक्रिय लोगों को दिये जाते थे, जिन्हें समाज सुधार तथा अन्य रचनात्मक कार्य के लिए सम्मान प्रदान किये जाते थे। इनमें रायबहादुर शास्त्री, खानबहादुर, खानसाहिब, राय साहिब तथा राव साहिब सम्मिलित है।

हरि प्रसाद टम्टा को उनके कुशल नेतृत्व के लिए प्रसिद्ध सम्मान ''राय साहिबी'' तीन जून, 1933 को प्रदान किया गया साथ हि उनकी लोकप्रियता तथा प्रभाव का अंदाज सहज ही लगाया जा सकता है कि वे उपरोक्त सम्मान प्राप्त करने वाल पर्वतीय क्षेत्र से प्रथम 'शिल्पकार' व्यक्ति रहे।

अक्टूबर, 1939 से दिसम्बर, 1941 से 31 मार्च, 1942 में संयुक्त प्रान्त अल्मोड़ा में कितनी भर्तियाँ हुई स्पष्ट प्रमाण निम्नलिखित तालिका से मिलता है[12]–

क्र०सं०	प्रान्त का नाम	कम्बेटेण्टस	नॉन कम्बेटेण्टस
1	संयुक्त प्रान्त अल्मोड़ा	16,241	15,810
		6,391	3,415
2	संयुक्त प्रान्त अल्मोड़ा	5,750	5,595
		92	140

प्रान्त में कुल भर्ती 43.396 सैनिकों में से 10.043 सैनिक अल्मोडा जिले से थे।[13] इन्ही प्रयासो से शिल्पकार वर्ग के लिए सेना में मार्ग खुला और शिल्पकारों को भी आगे बढ़ने का सुनहरा अवसर मिला। उन्होंने इस अवसर का बहुत सदुपयोग किया और ब्रिटिश सरकार के दिलों को जीतने में कोई कसर नही छोड़ी। इस सम्बन्ध में ''समता'' में निम्नलिखित लेख छपा–

''आपके अथक परिश्रम से भारत भर के दलितों में सबसे प्रथम शिल्पकारों को फौज में भर्ती होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। साथ ही शिल्पकारो की तीन 'पाइनियर बटालियन' के शिल्पकार सिपाहियों और उसके अफसरों को धन्यवाद, कि यह बटालियन सर्वश्रेष्ठ कार्य करके जाति का सुख उज्जवल कर रही है।''[14]

कुछ समय पश्चात् युद्ध के दौरान ही 5 'पाइनियर बटालियन' भी बनाई गई जिसमें लगभग 5,000 शिल्पकारों को गढ़वाल और कुमाऊँ के पर्वतीय क्षेत्रों से भर्ती किया गया। 3 नम्बर बटालियन ईराक और ईरान होते हुए जर्मनी की लड़ाई में गई। तत्पश्चात् 6 साल की अवधि में 14 नायब सूबेदार तथा 2 सूबेदार (नैकराम व बालदीराम) बने, क्योंकि ब्रिटिश सरकार ने उनके कार्य–कलापों से प्रभावित होकर ही ये पदोन्नति दी गयी।

अंत में 1946 में युद्ध खत्म होने के पश्चात् ये बटालियानें टूटने लगीं और कोर इन्जीनियर्स के साथ मिलकर स्यालकोट में ये टूटी हुई बटालियनें आ गई अच्छा काम होने से ''पायनियर'' नाम बदलकर ''इन्जीनियर्स'' रखा, पर स्थायी बटालियन नहीं बन सकी। इस सम्बन्ध में हरिप्रसाद टम्टा ने पुनः आर्मी हेडक्वाटर से सम्पर्क किया और शिल्पकार कम्पनी की माँग कराई जो कुमाऊँ रेजीमेण्ट के साथ रह सकेगी, पर यह मांग नहीं मानी गई। इस प्रकार एक लम्बी प्रक्रिया से संगठन, संरचना और व्यवस्था का कार्य विकसित हुआ। कई चरणों मे विभिन्न रूपों में स्थापित अनियमित तथा अस्थाई बटालियनें बनकर अन्ततः स्थायी रूप से प्रथम विश्व युद्ध के दौरान ''कुमाऊँ रेजीमेन्ट'' के रूप में पहचानी गई।[15] उक्त बातों को देखते हुए भर्ती के सन्दर्भ में निश्चित विचारधारा ने भी समय और सभ्यता के दौर के पश्चात् जातिगत दीवारें कम की तथा सैन्य क्षेत्र में यह प्रगति का समय सिद्ध हुआ और आने वाले समय में कुमाऊँनी सेना की व्यवस्था का स्वतन्त्र रूप देखा गया।

सन्दर्भ सूची

1 पाठक शेखर, उत्तराखण्ड में जन आन्दोलन की रूपरेखा, पहाड़–2, पृष्ठ 103

2 अल्मोड़ा अखबार, 9 सितम्बर 1917, पृष्ठ 4, अल्मोड़ा

3 रावत कनक, कुमाऊँ रेजीमेण्ट का इतिहास (1800–1960), 1992 : कु0वि0वि0 द्वारा प्रकाशित शोध प्रबन्ध उक्त

4 शक्ति समाचार पत्र : दिसम्बर 1925।

5 अन्सारी अनवर मोहम्मद, कुमाऊँ में शिल्पकार आन्दोलन की झलक, पहाड़, पृष्ठ 3

6 समता, 24 फरवरी 1941, अल्मोड़ा, पृष्ठ 3

7 आर्या के० मोहन चन्द्र, शिल्पकार उत्थान तथा उसमें हरिप्रसाद टम्टा का योगदान, कु0वि0वि0 द्वारा अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, 2007, पृष्ठ 116

8 समता, 14 मई 1941, पृष्ठ 2
9 रावत कनक, उपरोक्त, पृष्ठ 101 उक्त
10 लीडर, 6 अगस्त 1941, पृष्ठ 4
11 आर्या के० मोहन चन्द्र, उपरोक्त : पृष्ठ 55
12 रावत कनक, उपरोक्त, पृष्ठ 4
13 कुमाऊँ कुमुद, 4 जून, अल्मोड़ा, पृष्ठ 13